INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

Impact Factor – 6.625 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

October-2019 Special Issue – 200

Cotemporary Problems in India and Remidies

Guest Editor :
Dr. R. V. Shikhare
Principal
R. B. Attal Arts, Science & Commerce College,
Georai, Dist. Beed (M.S) India

Associate Editors -
Mr. H. B. Helambe
Mr. B. S. Jogdand
Mr. R. B. Kale
Mr. S. S. Nagare
Mr. R. B. Pagore

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.researchjourney.net

SWATIDHAN PUBLICATIONS

31	Temporal Analysis of Vegetation by Vegetation Indices from Multi Dates Satellite Images : Application to Dindori Tahsil, Nashik District, Maharashtra. **Sitaram Nikam & Dr. D. S Gajhans**	131
32	East-West Cultural Encounter in Chitra Bangerjee's Novel Oleander Girl **Mr. Satish Funne**	136
33	Problems of Rural Migration in India **Mr. B. S. Jogdand**	140
34	White Collar Crime in India **Mr. Bandu Patekar**	143
35	Poverty in India **Mr. Ganesh Walunj & Dr. Suhas Avhad**	146
36	Causes of Poverty and Remedies in Contemporary India **Prof. Dattatraya Mundhe**	150
37	An Approach towards Social Security **R. J. Gaikwad**	153
38	Sports Medicine in Human Health by Environment Provocation **Ravindra Kharat**	156
39	Child Labour in Brick Kiln Industries **Shaikh Jahara Abdul Rahim**	158
40	Main Causes of Economic Inequality in India **Mr. Vaibhav Shendage**	162
41	Naxalism in India : A Revolution of Displaced Tribal People for Social Justice **Shesherao Rathod**	166
42	Poverty in An Unorganised Sector **Dr. Sonal Ubale**	170
43	Corruption : A Contemporary Problem in India **Subhash Pole**	173
44	Modernization Beacon throughout Renovaton Task : Development in Literature Dissection **Uday Kharat**	176
	हिंदी विभाग	
45	भक्षक एकांकी और पर्यावरण समस्या **डॉ. संदिप बनसोडे, रामेश्वर देवरे**	178
46	भारत मे आतंकवाद की समस्या **दीपक डोंगरे**	181
47	रचनात्मक विकास मे निरक्षरता बाधक नही **प्रा. दीप्ती होळकर**	184
48	कान्हा कोयला क्षेत्र मे कार्यरत श्रमिको का जीवन स्तर 'जिला छिंदवाडा के संदर्भ मे **डॉ. शशि बाला भट्ट**	189
49	भारतीय नारी – सामाजिक शोषण (कहानी विशेष) **डॉ. अरविंद घोडके**	198
50	भारत की निर्धनता : रणनीतियाँ और कार्यक्रम **डॉ. जे.एस.धायगुडे**	200
51	प्रेमचंद के उपन्यासो में विधवा नारी की समस्या **डॉ. संगीता आहेर**	208
52	समकालीन हिंदी ग़ज़लो में चित्रित सामाजिक समस्याएँ **डॉ. सय्यद शौकत अली**	211
53	समकालीन हिंदी ग़ज़ल में पूँजीवाद **डॉ. रजनी शिखरे**	216
54	भारतीय साहित्य में सामाजिक समस्याएँ (मध्यकालीन संत साहित्य के विशेष संदर्भ में) **डॉ. ललिता राठोड**	219
55	हिंदी ग़ज़ल में जीवनमूल्य **डॉ. रजनी शिखरे**	222
56	हिंदी साहित्य में नारी जीवन की समस्याएँ **डॉ. रजनी शिखरे, एच. टी. पोट कुले**	225
57	भारत में भ्रष्टाचार की समस्या **डॉ. आर.के. देशमुख**	229
58	भ्रष्टाचार **महादेव करडे**	233
59	सामाजिक विकास पर पर्यावारणीय प्रभाव **किरण पवार, कविता जोशी**	239
60	हिंदी ग़ज़ल में आर्थिक समस्या **डॉ. रजनी शिखरे, डॉ. मनोजकुमार ठोसर**	243
61	प्रकृति सौंदर्य के कवि : केदारनाथ अग्रवाल **संतोष नागरे**	246
62	दलित साहित्य में समाजिक समस्याएँ (अनुदित आत्मकथा के संदर्भ में) **डॉ. रजनी शिखरे, राजाराम जाधव**	251
63	भारत में आतंकवाद की समस्या **डॉ. रमेश व्ही.मोरे**	255
64	वैश्विकरण की आंधी में दरकते संस्कार : सिसकते वृद्ध दिमर्श पर एक दृष्टि **ऋचा राय**	257

समकालीन हिंदी ग़ज़ल में पूँजीवाद

डॉ.रजनी शिखरे
सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभाग अध्यक्ष
र.भ.अट्टल महाविद्यालय गेवराई,जि.बीड
(महाराष्ट्र)

ग़ज़ल मूलत : कविता का एक काव्य रुप है। जिसके अपने नियम है। ग़ज़ल की लोकप्रियता आज भारत में सर्वविदित है। परंतु उर्दू भाषा में कही जानेवाली ग़ज़ल की रोमानीयत हिंदी भाषा की ग़ज़लों में नहीं है। फिर भी दुष्यंतकुमार, अदम गोंडवी ने उसकी लोकप्रियता में चार चाँद लगा दिए है। समकालीन हिंदी ग़ज़लकारों ने ग़ज़ल को आगे परिष्कृत कर उसे शिखर पर ले जाने का सफल प्रयास किया है। ग़ज़ल का शब्दगत अर्थ है 'प्रेमिका से गुफ़्तगू करना'। परंतु समकालीन परिदृश्य में ग़ज़ल केवल प्रेमिका से गुफ़्तगू नहीं कर रही है। आज ग़ज़ल प्रेमिका के साथ साथ उसके दु:ख- दर्द एवं समस्याओं से भी गुफ़्तगू कर रही है। अन्याय -अत्याचार एवं शोषण का विरोध भी समकालीन ग़ज़ल करती हुई नजर आ रही है। सभी प्रकार की समस्या एवं संकटो से लड़ने एवं विद्रोह का रास्ता पकड़कर न्याय देने का काम समकालीन ग़ज़लकार अपनी ग़ज़लों के माध्यम से कर रहे हैं। समकालीन ग़ज़लकारो ने भूमंडलीकरण के कारण निर्मित वर्तमान समस्याओं को भी अपने ग़ज़लों के माध्यम से सशक्त अभिव्यक्ति दी है। समकालीन गजलकरों ने पैसा धन या पूँजीवाद से निर्मित समस्याओं को भी पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

समकालीन परिदृश्य में जीवन की विसंगतियाँ और विडम्बनाओं ने वातावरण में एक प्रकार की कुंठा एवं क्षोभ भर दिया है। मनुष्य का जीवन तनावग्रस्त एवं निराशा से भरा हुआ है। इसका मूल कारण भौतिकवादी एवं पूँजीवादी पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव है। समकालीन ग़ज़लकारों ने इस प्रवृत्ती पर अपनी ग़ज़लों के माध्यम से तीखा प्रहार करके यथार्थ रुप में चित्रण किया है।

वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में भारतीय मनुष्य पर पाश्चात्य भौतिकवादी संस्कृति का प्रभाव हुआ है। आध्यात्मिकता अब दिखावे का काम करने लगी है। इस भौतिकता ने पैसा ही ईश्वर और पैसा ही जीवन बनाया है। चंद्रसेन विराट आज के इस शहरीकरण और धन के पीछे भागनेवाले मनुष्य का चित्रण यथार्थ रुप में करते है -

"पैसे का तंत्र यहाँ पैसा ही ईश्वर
पैसे के अधीन है मेरे शहर के लोग।"[1]

"स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश की औद्योगिक प्रगति के परिणामस्वरुप महानगर विकसित हुए। इन महानगरों का भौतिक विकास बडी तीव्र गति से हुआ। परंतु इन महानगरों में विद्रुपताएँ भी पनपती गयी।"[2] इसी विद्रुपता , विसंगतियों एवं
विडम्बनाओं को समकालीन ग़ज़लाकारों ने यथार्थता के साथ चित्रित किया है। मनुष्य को स्वार्थ एवं व्देष ने घेर लिया है। पैसों के सामने दुसरों को कोई महत्त्व देना मनुष्य को स्वीकृत नही है। मनुष्य इस पूँजीवादी एवं स्वार्थी दुनिया का शिकार हुआ है। विराट की ग़ज़लों में मनुष्य का स्वार्थ देखिये -

"मूल्य मानव के स्खलित पशुवृत्तियों के सामने
अब ह्दय पर सिर्फ पैसों का हुनर हावी हुआ।"[3]

इस तरह मनुष्य पर पैसों का प्रभाव कितना हावी हुआ है उसका यथार्थ चित्रण विराटजी ने किया है। ग़ज़लकार अदम गोंडवी इस पूँजीवाद की रचना को ही बुनियादी तौर पर खराब मानते हैं। भौतिकवाद, पूँजीवाद, मनुष्य के लिए

निरुपयोगी है। परंतु आज मनुष्य पूरी तरह इसके अधिन नजर आता है। अमीरी और गरीबी में जिस प्रकार की होड लगी है उसका परिणाम ही मनुष्य जीवन में समस्या निर्माण हो रही है। अदम गोंडवी का शेर देखिए -

लगी है होड सी देखो अमीरी और गरीबी में,
ये पूँजीवाद के ढाँचे की बुनियादी खराबी है।"[4]

आज समाज में यह स्थिति निर्माण हुई है कि गधा हो परंतु पैसेवाला हो। पैसेवाले गधे व्यक्ति का भी सम्मान होता है। परंतु गरीब व्यक्ति ज्ञानी होने पर भी उसका सम्मान नहीं होता। यह बदलाव समाज में कहॉ सें आया है। यह प्रश्न उपस्थित करने का काम ग़ज़लकार जहीर करैशी कर रहे है। वे कहते है कि समाज में लोगों ने प्रतिभा से अधिक पैसों का सम्मान किया है। जिससे ऐसा लगता है कि ज्ञान, धर्म एवं सत्य से भी अधिक पूँजीवादी व्यवस्था ने भौतिक संपदा या पूँजी को महत्तवपूर्ण माना है। परंतु इसका उपयोग केवल जीवन के एक साधन के रुप में होना चाहिए। परंतु विडंबना यह है कि लोग पैसे को ही जीवन का साध्य मान रहे है। उसका यथार्थ चित्रण देखिए -

"यह बदलाव कहाँ से आया कैसे आया,ज्ञात नहीं
प्रतिभा से ज्यादा लोगों ने पैसो का सम्मान किया।[5]

अशोक अंजुम जी अपने ग़ज़ल के माध्यम से भौतिकतावादी मानवीय प्रवृत्ति और बाजारवादी संस्कृति से प्रभावित लाभ की प्रवृत्ति को उजागर करते हैं। बाजार के प्रभाव से प्रभावित मनुष्य रिश्ते-नातों से अधिक पैसों पर प्रेम करने वाले मनुष्य का यथार्थ चित्रण करते हैं। बीवी में तवाइफ की अदा ढूँढनेवाले इस स्वार्थी मनुष्य का यथार्थ रुप प्रस्तुत किया है। प्यार में नफा ढूंढनेवाले मनुष्य को सीधा व्यापार ही करने की सलाह अशोक अंजुम देते है। " अंजुम की संवेदना किसी एक दायरे में कैद न होकर दूर-दूर तक फैली हे। समाज में जहाँ कहीं भी कुछ गलत हो रहा है या जिससे गलत होने की संभावना है, उस पर पैनी नजर है और उसकी सफल तथा सार्थक अभिव्यक्ति है। कहीं आक्रोश है तो कही चिंता है।"[6] अशोक अंजुम की चिंता उनकी ग़ज़ल में देखिये-

"बाजार का कुछ ऐसा असर उन पे पडा है
बीवी में तवाइफ की अदा ढुँढ रहे है।
रहने दो प्यार -प्यार वे व्यापार ही करे
जो लोग प्यार में भी नफा ढुँढ रहे है।"[7]

गिरिराजशरण अग्रवाल पैसा एवं उसके प्रभाव स्वरुप मनुष्य का जीवन किस प्रकार हो गया है यह यथार्थ रुप में प्रस्तुत करते है। पैसों के कारण मनुष्य की स्थिती दयनीय कैसी हुई है। पूँजीवाद के फलस्वरुप प्रेम, निष्ठा, वादे, चाहत, सुख-दुख, सहयोग, अपनत्व, संवेदना एवं भावनाओं का वरण करनेवाले मनुष्य का चित्रण वे करते है। इस प्रेम के अभाव में मनुष्य पैसों के लालच में रिश्तो-नातों का यथार्थ क्या है यह अग्रवाल की ग़ज़ल में देखिए -

"धूल बनकर उड गई, निष्ठाएँ वादे, चाहते.
बीच में संबंधो के जिस वक्त पैसा आ गया।"[8]

पूँजीवाद ने पूरे संसार को ही प्रभावित किया है। भौतिकवादी दुनिया की ताकत ने मनुष्य की विश्वसनीयता को समाप्त किया है। बाजार और विज्ञापन के दिखावे में यह दुनिया मानवीय मूल्यों को भूल गयी है। विज्ञापन के इशारों पर नाचनेवाली दुनिया भौतिक चीजों और भौतिक सुख के पीछे भाग रही है। त्याग,सेवा,भक्ति,ईश्वर, मुक्ति या मोक्ष आदि के बारे में चर्चाएँ तो पूरी दुनिया में हो रही है परंतु धन की दिवानी यह दुनिया हर जगह मिलती है। मोक्ष और त्याग के लिए पैसों की जरुरत नही है परंतु सत्य यह है कि धर्म भी आजकल पैसे एवं धन के आधार पर चल रहा है। विवेकजी का शेर देखिए -

"वहाँ है त्याग की बाते इधर है मोक्ष के चर्चे,
ये दुनिया धन की दिवानी इधर भी है उधर भी है।"[9]

ISSN : 2348-7143
October-2019

इस प्रकार यह पुरी दुनिया भौतिकवादी संस्कृति, पूँजीवादी, उपभोक्तावादी संस्कृति, बाजारवाद और लाभ-हानि से प्रभावित होती हुई दिखाई दे रही है। उसका यथार्थ चित्रण समकालीन हिंदी ग़ज़ल में दिखाई देता है। समकालीन ग़ज़ल जामो-मीना की खनक से दूर मानवीय समस्या एवं सुख-दु:ख को यथार्थ रुप में चित्रित करती हुई वैश्वीकरण भूमंडलीकरण के दौर से उपस्थित पूँजीवादी या भौतिकवादी समस्याओं को यथार्थ रुप में प्रस्तुत कर रही है। अध्यात्मिक शक्ति के यथार्थ को भी यह प्रस्तुत करती है। पैसे के तंत्र के अधिन शहरीकरण के अकेलेपन एवं निराशा को ग़ज़ल ने प्रस्तुत किया है। नये जीवनमूल्य एवं मूल्य-विघटन पर धन का होनेवाला दुष्परिणाम और अमीरो-गरीबी की होड से निर्मित कुंठा, एवं दमन को भी समकालीन ग़ज़ल ने पाठकों को सजग किया है। समाज में आया हुआ यह परिवर्तन रोकने का प्रयास भी ग़ज़ल कर रही है। बाजार से प्रभावित आज का मनुष्य रिश्तो-नातों को भी भूलकर अपनी लाभ या फायदे की अधिक सोच रहा है। पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित आज के मनुष्य का यथार्थ चित्रण समकालीन ग़ज़ल में हुआ है। अत: समकालीन हिंदी ग़ज़ल पूँजीवादी संस्कृति एवं उससे निर्मित मनुष्य के सुख - दु:ख, दर्द, एवं समस्याओं को पूरी ईमानदारी के साथ उजागर कर रही है।

संदर्भ :-

1. चंद्रसेन विराट की प्रतिनिधी ग़ज़लें - संपा.डॉ.मधु खराटे, पृ.क्र.71
2. हिंदी ग़ज़ल के नवरत्न - डॉ. मधु खराटे, पृ.क्र.156
3. चंद्रसेन विराट की प्रतिनिधी ग़ज़ले -संपा.डॉ. मधु खराटे पृ.क्र.50
4. समय से मुठभेड - अदम गोंडवी, पृ.क्र. 59
5. जहीर कुरैशी की चुनिंदा ग़ज़लें - संपा.डॉ.मधु खराटे, पृ.क्र. 98
6. रोशनी का घर - सं.जितेंद्र जौहर, पृ.क्र.84
7. अशोक अंजुम की प्रतिनिधी ग़ज़लें - अशोक अंजुम, पृ.क्र.134
8. गिरिराजशरण अग्रवाल की प्रतिनिधी ग़ज़लें - संपा.शिवाजी देवरे, पृ.क्र. 120
9. गुफ़्तगू अवाम से है - ज्ञानप्रकाश विवेक, पृ.क्र. 20